भूमिका

मनुष्य के विकास में बहुत से तत्व सहायक के रूप में भूमिका निभाते हैं। जैसे प्रकृति में सभी पशु व पक्षी आदि सुख व दुख का अनुभव करते हैं। ठीक इसी प्रकार मनुष्य को भी मनोरंजन की आवश्यक्ता होती है। मनोरंजन भले ही शाब्दिक संरचना से नवीन शब्द प्रतीत होता है। मनोरंजन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की मनुष्य का इतिहास। मनोरंजन के माध्यम समय एवं उपलब्धता के साथ बदलते रहे हैं। दर्ज इतिहास (Recorded history) में सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक थी। इस काल में भी मनोरंजन के साधन के रूप में मछली पकड़ना, शिकार करना, चौपड़ आदि शामिल थे। बदलते समय के साथ वैदिक युग में भी शिकार, कुछ खेलों को मनोरंजन के माध्यम के रूप में प्रयोग में लाया जाता रहा। मनोरंजन के आधुनिक माध्यम से पहले शिकार, नृत्य, जानवरों में युद्ध आदि के द्वारा मनोरंजन किया जाता रहा है। मनोरंजन के इन माध्यों में कुछ ऐसे माध्यम भी थे जो आज भी थोड़े बहुत बदले स्वरूप में उसी प्रकार से चलते चले आ रहे हैं। जैसे मदारी के खेल, जादू का खेल, बहुरूपिया कला, सपेरों के खेल आदि। समय के साथ बहुत सी कलाओं में बदलाव आया है जैसे की सपेरों के खेल व शिकार का गैर-कानूनी घोषित होना।

मनोरंजन के बहुत से माध्यमों का विकास तकनिकी के विकास के साथ भी हुआ। रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट भी ज्ञान व मनोरंजन के प्रमुख साधन के रूप में आज एक विशेष स्थान रखते हैं। मनोरंजन के तमाम साधनों के साथ ही विडियो गेम के आविष्कार ने मनोरंजन कि दशा व दशा बदली एंव मोनरंजन कि परिभाषा को बदल दिया है। मनोरंजन की दुनिया में विडियो गेम की धमक का अंदाजा सिर्फ इस बात से भी लगाया जा सकता है की विडियो गेम आज एक सफल उद्योग के रूप में साबित हो चुका है। यह उद्योग खेल उद्योग (Gaming Industry) के नाम से स्थापित है।

भारत के बारे में कहा जाता है यहां विविधता में एकता है। यह विविधता लगभग हर क्षेत्र में विद्यमान है। भारत की यह विविधता लोकवार्ता में भी नजर आती है। लोक वार्ता की विविधता भारत को एक रंगबिरंगा एवं बहुलोक धर्मी देश बनाते हैं। मनोरंजन के इन पारम्परिक व आधुनिक माध्यमों के मध्य बहुत से ऐसे माध्यम हैं जो आज भी अपने परम्परागत रूप में चलते चले आ रहे हैं। इन परम्परागत मनोरंजन माध्यमों में से है बहुरूपिया कला। बहुरूपिया कला आज भी लोगों में लोकप्रिय है। बहुरूपिया लोक कला के माध्यम से मनुष्य के मनोरंजन के साथ उसके ज्ञान में भी वृद्धि एवं जागरूक भी किया जाता रहा है।

प्रस्तुत लघु शोध के अध्ययन में बहुरूपिया लोक कला की भूमिका का अध्ययन को वर्तमान के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। मनोरंजन के इस पारम्परिक साधन को बदलते समय के साथ लोग किस प्रकार का परिवर्तन इस कला में चाहते हैं को जानने का प्रयास किया गया है। बहुरूपिया कला की अब भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में क्या स्थिति है को इस शोध के माध्यम से जानने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को निम्न अध्यायों में बांटा गया है

प्रस्तुत शोध **‘ मनोरंजन के रूप में बहुरूपिया लोक कला की भूमिका का अध्ययन’** को निम्न अध्यायों के अन्तर्गत पूरा किया गया है।

सारांश

अध्याय : 1. प्रस्तावना एंव शोध प्रविधि

इस अध्याय में शोध-विषय की जानकारी तथा उसके विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें समस्या का निर्धारण एंव अध्ययन का क्षेत्र, अध्ययन का उद्देश्य को समाहित किया गया है। शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन भी किया गया है। इसमें पुस्तकों का अवलोकन, पूर्व में प्रकाशित एंव अप्रकाशित शोध तथा पत्रों, पत्रिकाओं एंव वेबसाइटों का भी अवलोकन शामिल किया गया है। शोध प्रविधि एंव शोध सीमाएँ इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है की शोध कार्य को किन विधियों द्वारा सम्पन्न किया गया है।

अध्याय : 2. लोक कला व परम्परागत संचार : ऐतिहासिक व अवधारणात्मक पृष्ठभूमि

इस अध्याय में बहरूपिया लोक कला ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत लोक कला के विविध रूप। बहरूपिया कला की अवधारणा को समाहित किया गया है। बहरूपिया कलाओं के विषय को भी शामिल किया गया है। बहरूपिया कला के प्रदर्शन की पृष्ठभूमि क्या होती है। बहरूपिया और स्वाँग में अन्तर स्पष्ट किया गया है। बहरूपिया कला के साथ अन्य कलाओं के बारे में संक्षिप्त रूप से चर्चा की गई है।भारत में बहरूपिया कला कि स्थिति कैसी है एंव पहले कैसी थी। बदलते समय और बदलती प्राथमिकताओं के साथ क्या बदलाव आया है। बहरूपिया कला और स्वाँग कला में क्या सम्बन्ध हैं कोई संबन्ध है अथवा नहीं यह बताने का प्रयास किया गया है।

अध्याय : 3. बहरूपिया लोक कला : मनोरंजन माध्यम व समाज

इस अध्याय में मनोरंजन के परम्परागत व आधुनिक माध्यमों की चर्चा की गई है। समय के साथ बदलते मनोरंजन के माध्यमों का की भी चर्चा की गई है। बहरूपिया कलाकारों की सामाजिक उपस्थिति की भी चर्चा की गई है। समाज में कलाकारों की स्थिति कैसी है। इस अध्याय में बहरूपिया कलाकारों का समाज से जुड़ाव कैसा है। इस पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। इस आध्याय में लोक कला माट्यों के वर्गिकरण को समझाया गया है। इस अध्याय में बहरूपिया कलाकारों की सामाजिक व व्यावसायिक स्थिति पर भी चर्चा की गई है।

अध्याय : 4. आँकड़ों का संकलन, प्रस्तुतिकरण एंव विश्लेषण

इस अध्याय में बहरूपिया कला को केन्द्र में रखकर आँकड़ों का संकलन किया गया है। बहरूपिया कलाकारों से अनुसूची, कला का प्रदर्शन देख चुके लोगों से प्रश्नावली एंव विशेषज्ञों के साक्षात्कार को शामिल कर आँकड़ों का

विश्लेषण किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। आकड़ों का प्रस्तुतिकरण पाई चार्ट एंव ग्राफ के माध्यम से किया गया है।

अध्याय : 5. बहरूपिया लोक कला : संचारशैली एवं प्रभावशीलता

इस अध्याय में प्राप्त आंकड़ों व निष्कर्ष तथा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़ों द्वारा बहरूपिया कला की संचार शैली को बताया गया है। बहरूपिया कला कथा चक्र को बताया गया है। बहरूपिया कला की प्रासंगिकता पर भी चर्चा की गई है।

अध्याय : 6. निष्कर्ष एंव सुझाव

इस अध्याय में विश्लेषित आँकड़ों के निष्कर्ष को शामिल किया गया है। सारांश के माध्यम से शोध के समस्त कार्यों का संक्षिप्त रूप में अध्यायवार विवरण दिया गया है। शोध में दिए गए सुझावों को भी इस अध्याय में शामिल किया गया है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट के अंतर्गत सन्दर्भ सूची को शामिल किया गया है। परिशिष्ट में शोध कार्य में प्रयुक्त सहायक सामाग्री को प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्रश्नावली एंव अनुसूची तथा साक्षात्कार के प्रश्नों का नमूना मूल रूप में दिया गया है।